P-18

ISSN 097-6459

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

50

स्वर्ण जयंती अंक

Editor
Dr.Sudhir Sharma

अंक-50, संख्या-01
जनवरी-मार्च, 2010

Volume XXXXX Number 01
Jan.-March. 2010

शोध-प्रकल्प

अंक : 50 वर्ष : 15 संख्या : 1 जनवरी-मार्च, 2010

SHODH-PRAKALP

Volume - XXXXX, Year - 15, Number -1, January-March, 2010

Contents

अनुक्रम

1.	The Androgynous World Of New Women In Shobha De's Fiction	Dr.Ashish Gupta 7
2.	"Nectar in a Sieve" : Microcosm of modern India	Ravikant Malviya, Dr. Ashish Gupta 10
3.	Organized Retailing in India	Dr. A.R. Krishna, Dr. Mritunjay Kumar Pandey 13
4.	Decadal linear growth rate of groundnut and soybean in undivided districts of Chhattisgarh	Agashe D.R., A.S.R.A.S. Sastri A.M.Khobragade and Rajni Agashe 18
5.	Role of Industry in development of Bhilai and adding it to development of Nation	Rajashree Chatterjee 21
6.	A Glimpse on Indian Drama and its Roots	Bharti Savetia 25
7.	Development of a programmed text in history and civics for high school students	Dr.Pramod Kumar Naik, Dr. (Smt.) Shntilata Francis 29
8.	Medical Textile	Dr. Shipra Banerjee Ms. Jyoti Khullar 32
9.	Junk Food and Health	Babita Dubey, Saroj Sahu 35
10.	Rising Divorces Cases in Urban India: Is it Moving towards Family Disorganization	K.N.Dinesh, Prof. J. L.Sonbhadra 42
11.	Application of Dynamic Programming for Resource Allocation Problem	Dr. (Mrs.) Prabha Rohatgi 46
12.	Biblical Narrative in Zora Neale Hurston's Moses Man of the Mountains	Nidhi Mishra 55
13.	Socio-economic Correlates of Adoption Behaviour of Farmers regarding Control Measures of Various Insect Pests of Rice Crop	H.S. Raghuvansi, K.K. Shrivastava, J.D. Sarkar and P. Shrivastava 57
14.	An Assessment of Knowledge and Adoption of Control Measures of major insect pests of rice crop by the Farmers of Dhamtari district	H.S. Raghuvansi, K.K. Shrivastava, V.K. Dubey and P. Shrivastava 62
15.	Global Recession and its Impact on Indian Economy	Anoop Shrivastava, T.G. Madhu Soodanan Rajeev Sharma 67
16.	Role of Financial Information System in Decision Making	Dr. Kirti Shrivas 72

www.shodhprakalp.com

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक/संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं .

17. कथाकार मन्नू भण्डारी का अवदान	डॉ. महेशचंद्र शर्मा	74
18. वैदिक काल में भारतीय शिक्षा पद्धति	डॉ. तृषा शर्मा	75
19. जनजातीय गोंड़िय भाषा संस्कृति 'एक चिन्तन अभिव्यक्ति'	डॉ. फूलदास महंत	78
20. हिन्दी नवगीतों में रूपीय विचलन प्रयोग	डॉ. शालिनी सिंह	79
21. सरगुजा का ऐतिहासिक स्थल- रामगढ़	डॉ. शशिकला सिन्हा	83
22. आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति	Dr. Wijeesh Ronit Saimon	86
23. भारतीय अर्थव्यवस्था में गरीबी का उत्थान कृषि से	डॉ. एच.पी. सिंह सलूजा, श्रीमती रानी शुक्ला	91
24. भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव ग्रामीण विकास	डॉ. डी.के. सिंघल, डॉ. अमिता सिंघल	93
25. महिलाओं की स्थिति : कल्पना एवं यथार्थ	डॉ. सुचित्रा शर्मा, डॉ. ए.एन. शर्मा	98
26. छत्तीसगढ़ में पर्यटन के विकास में छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल की भूमिका	डॉ. आशीष दुबे, श्रीमती अर्चना तिवारी	102
27. पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में इतिहास में शोध-प्रवृत्ति : एक ग्रंथमिति अध्ययन	प्रीती रानी मिश्रा, डॉ. माया वर्मा	104
28. पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, में वनस्पति विज्ञान में अनुसंधान प्रवृत्ति : एक ग्रंथमिति अध्ययन	क्षमा ठाकुर, डॉ. माया वर्मा	111
29. सल्तनत काल में दास स्त्रियों की स्थिति	दीपाली पाण्डेय	115
30. छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण विकास में शिक्षा का महत्व	डॉ. बी.एल. सोनेकर, डॉ. ए.के.पाण्डेय	120
31. भारत में उच्च शिक्षा की प्रगति एवं समस्याएं	डॉ. अरुन्धती शर्मा	126
32. कन्या भ्रूण हत्या : एक गंभीर सामाजिक अपराध	श्रीमती प्रीति सतपथी	129
33. उच्च शिक्षा की सामाजिक प्रासंगिकता की विकास यात्रा	डॉ. व्ही.के.पाण्डेय	131
34. छत्तीसगढ़ में हडको के कार्यों का मूल्यांकन एक अध्ययन	डॉ. गिरिजा शंकर गुप्ता	135
35. कक्षा 12 के विद्यार्थियों हेतु भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षण का विकास	डॉ. सरस्वती अग्रवाल, डॉ. रश्मि शुक्ला	140
36. शासकीय बजट आधारित ग्रामीण सामाजिक लिंग का विश्लेषण	मणिशंकर मिश्रा	144
37. ग्रामीण परिवारों में महिला उत्पीड़न व टोनही प्रताड़ना	डॉ. के. पी. कुर्रे	148
38. ब्रिटिश कालीन छत्तीसगढ़ में प्राथमिक शिक्षा के विकास का अध्ययन	सीमा पाण्डेय	152
39. प्राचीन भारतीय एवं आधुनिक भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की दशा का तुलनात्मक अध्ययन	दीपक जायसवाल	155
40. अनु.जा. एवं जन.जाति की बालिकाओं में अभिभावकों की आर्थिक स्थिति का उनके प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के दौरान पाये जाने वाले अपव्यय एवं अवरोधन पर पड़ने वाले प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. रेनू श्रीवास्तव, श्रीमती विभा श्रीवास्तव	161
41. स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता का स्वरूप	डॉ. रोशनी मिश्रा	164
42. साहित्यिक पत्रकारिता का स्वरूप एवं विकास	डॉ. रूपाली चौधरी	166
43. मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्यों में भारतीय संस्कृति	डॉ. यमुना प्रसाद रतूड़ी	168
44. रीतिकालीन काव्य में सामंती परिवेश का यथार्थ	डॉ. जगदीशचन्द्र, डॉ. राधारावत, डॉ. सुरेशचन्द्र	173

7
shish Gupta 10
ndey 13
.S. Sastri
ajni Agashe 18
21
25
ncis 29
32
hu 35
Sonbhadra 42
tgi 46
55
vastava 57
ivastava 62
67
72

ों से संपादक/
हैं.

शोध-प्रकल्प, अंक-50, वर्ष -15, संख्या-1, जनवरी-मार्च, 2010, पृ. 98-101

महिलाओं की स्थिति : कल्पना एवं यथार्थ

• डॉ.श्रीमती सुचित्रा शर्मा •• डॉ. ए. एन. शर्मा

वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा और बढ़ती सामाजिक चेतना ने सभी वर्गों को प्रभावित किया है। विशेष रूप से महिलाओं ने अपने पारंपरिक बधनों से अलग नये क्षितिज बनाये हैं। उनकी सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति नई चेतना से मुखरित है। परम्परावादी सोच के प्रति प्रतिकार, प्रतिवाद स्पष्ट रूप से उनकी नई स्थिति में परिलक्षित होने लगा है। जिसमें हमारी सामाजिक सांस्कृतिक अधिसंरचना की बुनियाद प्रभावित होकर हिलने लगी है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के बढ़ते विस्तार ने उनकी स्थिति को प्रभावित कर एक नये भूमंडलीय परिवेश का निर्माण किया है। महिलाओं की सोच भी इन स्थितियों में नये वैचारिक विमर्श की ओर बढ़ती जा रही है, जिसने नये द्वन्द को जन्म दिया है और स्त्री घर और बाहर दोनों ही मोर्चों पर अपने जीवन को संघर्श की स्थिति में पा रही है।

इस वैचारिक स्थिति ने महिलाओं के सभी वर्ग – जागृत शक्ति संपन्न , मध्यम वर्ग और मेहनतकश तबके की स्त्रियाँ, सभी को नये चिन्तन के अवसर प्रदान किये हैं। विवाह एवं परिवार की संरचनात्मक बनावट में पुरूष वर्चस्व के सामाजिक रूप नये सवालों के साथ समाज के समक्ष उपस्थित हो चुके हैं। अब नारी का पालन पोशण और समाजीकरण इन्हीं नये प्रतिमानों के आधार पर होने लगा है। उसकी आदतें, सोच, आचार–विचार नये सामाजिक मानदण्डों के अनुरूप घटित होने लगे हैं।

महिलाओं की स्थिति को निम्न आधारों पर देखा जा सकता है।

1) शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

2) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

3) मौखिक एवं परम्परात्मक परिप्रेक्ष्य

4) आधुनिक परिप्रेक्ष्य

वर्तमान समय में नारी की विरोधाभासी स्थिति, जो कल्पना और यथार्थ में पर्याप्त अंतर को परिलक्षित करती है। समाज के चिन्तक एवं प्रबुद्वजन, प्रशासक और नीति निर्माणकों, राजनेताओं के समक्ष एक वैचारिक प्रश्न उपस्थित करती है। यह जरूरी है कि नारी की प्रस्थिति में बदलाव लाया जाय, साथ ही यह भी कि इससे संबंधित वैचारिक आयामों को स्थानीय अवधारणाओं व सिन्द्वान्तों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेशित किया जाय।

प्रस्तुत आलेख में शोधकर्त्ताओं ने महिलाओं की स्थिति को कल्पना और यथार्थ में अंतर के आधार पर विश्लेशित करने का प्रयास किया।

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में शिक्षा और बढ़ती सामाजिक चेतना ने सभी वर्गों को प्रभावित किया है। विशेश रूप से महिलाओं ने अपने पारंपरिक बधनों से अलग नये क्षितिज बनाये हैं। उनकी सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति नई चेतना से मुखरित है। परम्परावादी सोच के प्रति प्रतिकार एवं प्रतिवाद स्पष्ट रूप से उनकी नई स्थिति में परिलक्षित होने लगा है, जिससे हमारी सामाजिक सांस्कृतिक अधिसंरचना की बुनियाद प्रभावित होकर हिलने लगी है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के बढ़ते विस्तार ने उनकी स्थिति को प्रभावित कर एक नये भूमंडलीय परिवेश का निर्माण किया है।

महिलाओं की सोच भी इन स्थितियों में नये वैचारिक विमर्श की ओर बढ़ती जा रही है, जिसने नये द्वन्द को जन्म दिया है और स्त्री घर और बाहर दोनों ही मोर्चों पर अपने जीवन को संघर्श की स्थिति में पा रही है। सामुदायिक संरचनात्मक व्यवस्था में पैसा, सत्ता और सम्मान के असमान वितरण ने महिलाओं को नये सिरे से सोचने हेतु विवश किया है। एक ओर वह उपभोक्ता वस्तु में बदल जाने का दंश, दूसरी ओर

• स. प्रा. (समाजशास्त्र)शासकीय महाविद्यालय, वैशालीनगर, भिलाइ
•• स. प्रा. (समाजशास्त्र)शासकीय महाविद्यालय, धामधा, दुर्ग

परम्परागत सामाजिक सोच में पुरूष वर्चस्व का कोप झेल रही है। दूरदर्शन और खुले बाजार ने इस पुरूष वर्चस्व के प्रतिवाद को नये तरीके से पेश किया है।

कहीं इसका विध्वंसक रूप दिखता है, तो कही अपेक्षाकृत अधिक सजग मीमांसा के रूप में। इस वैचारिक स्थिति ने महिलाओं के सभी वर्ग – जागृत शक्ति संपन्न वर्ग, मध्यम वर्ग और मेहनतकश तबके की स्त्रियाँ, सभी को नये चिन्तन के अवसर प्रदान किये हैं।

विवाह एवं परिवार की संरचनात्मक बनावट में पुरूष वर्चस्व के सामाजिक रूप नये सवालों के साथ समाज के समक्ष उपस्थित हो चुके हैं। अब नारी का पालन पोशण और समाजीकरण इन्हीं नये प्रतिमानों के आधार पर होने लगा हैं। उसकी आदतें, सोच, आचार–विचार नये सामाजिक मानदण्डों के अनुरूप घटित होने लगे हैं। परन्तु कहीं न कहीं हमारी सामाजिक व्यवस्था की जड़ें जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पोशक रही हैं। अभी भी स्त्री व पुरूष के बीच 'स्थितिगत विभेद' को बनाये रखे हुए हैं। इसी व्यवस्था में आदर्श और यथार्थ का अंतर सैध्दान्तिक और व्यावहारिक स्तर पर दिखाई देता है।

दोनों नस्लों के बीच असमानता अभी भी बरकरार है। 'स्त्रियाँ सामंजस्य में अधिक पहल व प्रयास करती है', जैसे आदर्शवादी वाक्य हमारी व्यवस्था में कहीं न कहीं इसी समाजीकरण की प्रक्रिया से ही उपजे हैं। उनके प्रति असमानता का भाव पुरूषों की दैनिक बोलचाल में भी देखा जाता हैं। इंसान से जुड़ी हर घटना में, चाहे वह प्रथा हो, मान्यता, मानदण्ड अथवा कोई गाली या अपशब्द हो पुरूष व स्त्री के बीच की विभाजन रेखा स्पष्ट दिखती है। हमारी संरचनात्मक बाध्यतायें ही महिलाओं की सामाजिक विरोधात्मक स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। संस्थात्मक व्यवस्था, सामुदायिक व्यवस्था और वितरण व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति कल्पना और यथार्थ के सकारात्मक और नकारात्मक रुप को प्रस्तुत करती हैं जो कि निम्न आधारों पर देखी जा सकती है –

1) शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य – (दिव्यात्मक रुप) विभिन्न प्रकार के शास्त्रीय एवं धार्मिक ग्रंथों में नारी के प्रति दृष्टिकोण का स्वरूप विविधता लिए हुए है। इन ग्रंथों में नारी को सकारात्मक और दिव्यात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया। एक ओर नारी को प्रमुख देवियों, यथा–दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में प्रस्तुत कर इस जगत के तीन प्रमुख सांसारिक आयामों से जोड़ा गया। दुर्गा शक्ति स्वरुपिणी है जो जन सामान्य को शक्ति प्रदान करती है। जीवन के लिए आवश्यक संपत्ति और समृद्धि का प्रतीक लक्ष्मी है तथा अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का प्रकाश देने वाली सरस्वती के रुप में नारी अपने दैवीय स्वरुप में इस संसार में शास्त्र सम्मत हो उपासना और विश्वास का आधार बनी। वहीं दूसरी ओर मिथक गाथाओं के द्वारा नारी को मानवीय गुणों से युक्त और मूल्यों के वाहक के रूप में प्रस्तुत किया गया। उसे नरक का द्वार, मोक्ष में बाधक और भोग्या बना अधिकार और नियत्रंण की सीमा रेखा में बांधा गया।

2) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य – (शक्ति एवं विकृत स्वरुप) इसमें एक ओर नारी को वीरांगना के रूप में, साहस व शक्ति का प्रतीक माना गया, जो शत्रु के विनाश के लिए कटिबद्व है – रानी लक्ष्मीबाई रानी दुर्गावती और रजिया बेगम के रुप में नारी ने अपने अदम्य साहस का परिचय दिया है और इतिहास में अपनी जगह सुनिश्चित की। वहीं उसे क्षमाशील, कोमल, चंचल–चपल और लज्जाशील भी माना गया। दूसरी ओर उसके विकृत ऐतिहासिक व पौराणिक रूप– जिसमें उसे कुलटा, चरित्रहीन, धूर्त, कर्कशा माना गया। कैकेयी, मंथरा, शूर्पनखा के रुप में नारी व्यवस्था में नकारात्क रुप में भी दिखाई दी। नारी के इन दोनों रूपों को समाज ने सहज रूप में स्वीकृति दी।

3) मौखिक एवं परम्परात्मक परिप्रेक्ष्य – (लोक जीवन में अभिव्यक्ति) इस स्तर पर नारी की स्थिति को लोक–साहित्य, लोक–वार्ता, लोक–गीत, लोक–संस्कृति, लोक–मिथक, लोक–नाट्य, लोक–ज्ञान, लोक–धर्म और लोकोक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया

गया है। लोक संस्कृति समकालीन होती है क्योंकि ये जीवन के यथार्थ, जीवन स्थितियाँ और जीवन–अनुभवों के आधार पर निर्मित एवं अभिव्यक्त होती है। कला, संगीत, चित्रकला, भित्तिचित्र, मांडन, जैसे सौन्दर्य परम अभिव्यक्तियों में नारी की स्थिति को आकलित करती हैं। परंपरागत पितृसतात्मक व्यवस्था ने नारी की अबला छबि को निर्मित किया। पुरूष द्वारा निर्मित छबियों ने ही नारी को भिन्न–भिन्न रूपों में गढ़ा है। चाहे वह पुरूष धर्म–गुरू हो, कवि अथवा लेखक या पितृसत्तात्मक व्यवस्था का सामान्य पुरूष। 4) आधुनिक परिप्रेक्ष्य (विकृत संघर्ष की स्थिति और विरोधाभासी छवि) आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी की विरोधाभासी छबि स्पष्ट रूप से दिखती है। एक ओर हर क्षेत्र में नारी का प्रवेश और सफलता, दूसरी ओर शिक्षा प्राप्ति के अवसरों में कमी, कुपोषण, बालिका– भ्रूणहत्या, दहेज शोषण, और बलात्कार आदि स्थितियाँ समाज के समक्ष प्रश्नचिन्ह है, और यह प्रश्न है देश की आधी आबादी का। समाज में व्याप्त मान्यताओं और विश्वासों ने नारी की सृजनात्मक प्रस्थिति को कमजोर बनाया। भारतीय संस्थात्मक व्यवस्था में आर्थिक, सत्ता और सम्मान के असमान वितरण ने महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर तक सीमित किया और शक्ति व सत्ता पर पुरूषों का अधिकार निर्धारित किया। शक्ति के सीमित अवसर के कारण, घर में विभिन्न भूमिकाओं को संपन्न करने के कारण विकृत शक्ति संघर्ष की स्थिति निर्मित हुई। जैसे सास–बहु, ननद–भौजाई और देवरानी–जिठानी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न विरोधी मानसिकताओं के कारण नारी की स्थिति के सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों ही स्वरूप उभर कर सामने आये हैं। नारी के संदर्भ में मूल्यों व प्रतिमानों को एक ऐसा रूप सामने आया है जो परम्पराओं का आधुनिकीकरण तो है साथ ही सुनने में असंगत सा लगता है।

विज्ञान में पी.एच.डी. करने वाली छात्रा को अच्छे वर प्राप्त करने के लिए सोमवार का व्रत रखना असंगत नहीं लगता। करवा चौथ व तीजा का व्रत पढ़ी लिखी और प्रगतिशील कहलाने वाली स्त्रियाँ भी रखती हैं। पत्नी वह व्रत अपने पति के सुख के लिए करती है, माता पुत्र के लिए और उसकी लंबी उम्र व कल्याण के लिए व्रत करती है, जबकि पति या पिता के लिए किसी व्रत का प्रावधान नहीं है। समाचार पत्र में छपने वाले विज्ञापन में योग्य जीवन साथी के लिए लड़के की शिक्षा व्यवसाय और आय का आकर्षक विवरण प्रस्तुत किया जाता है जबकि लड़की के लिए गौर वर्ण, सुन्दर और विशिष्ट गुण का होना आवश्यक माना जाता है। ऐसे ही न जाने कितने विरोधाभास नारी को लेकर हैं जो सामाजिक व्यवस्था में जन्म से लेकर, पालन–पोषण तक दिखते हैं।

इस आधार पर यह स्पष्ट है कि महिलाओं की स्थिति में, चाहे वह किसी भी परिप्रेक्ष्य में हो पर्याप्त अंतर दिखाई देता है वर्तमान संदर्भ भले ही महिला सशक्तीकरण का रहा हो, फिर भी आदर्श और यथार्थ के अंतर को लिये हुए है। महिला उन्मुखीकरण का बाह्य स्वरुप आंकड़ों में प्रगति का ग्राफ दिखाता है परंतु वास्तव में अभी भी महिलाएँ पितृसतात्मक व्यवस्था के शिकंजे से मानसिक रुप से मुक्त नहीं हो पाई हैं। उनके पूर्ण सशक्तीकरण हेतु पूरा एक वर्ष निर्धारित किये जाने के बावजूद सार्थक परिणाम नहीं मिले हैं। आज भी महिलायें स्वयं निर्णय नहीं ले सकतीं, या स्वयं को असहाय महसूस करती हैं, हैवानियत भरे खेल और भावनाओं से खिलवाड़ आज भी चल रहे हैं। यही नहीं नब्बे प्रतिशत महिलायें अभी भी सशक्तीकरण की प्रक्रिया के ज्ञान से अन्जान है। कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, छेड़खानी, हत्या, दहेजप्रथा, यौन शोषण और अत्याचार आदि कृत्य महिलाओं के संदर्भ में बद्दस्तूर जारी हैं। नेशनल क्राइम ब्यूरो ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है।

- 19 महिलाएँ दहेज की वेदी पर चढ़ जाती हैं।
- 50 महिलाओं की इज्जत लूट ली जाती हैं।
- 480 महिलाएँ छेड़खानी का शिकार होती हैं।
- 45 प्रतिशत भारतीय महिलाओं की उनके पति द्वारा पिटाई होती हैं।
- 50 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ हिंसा की घटनाओं

का शिकार होती हैं।

- आत्महत्या का प्रयास करने वाली 74.8 प्रतिशत महिलाएँ हिंसा का शिकार होती हैं।
- पत्नी बात नहीं मानती तो 77 प्रतिशत पुरुष उसी को अपना अपमान समझते हैं।

वस्तुतः महिलाओं की स्थिति को लेकर जो कुछ भी दिखता है वह सराहनीय है परंतु वह पक्ष भी उजागर होना चाहिए जो अप्रत्यक्ष और अदृश्य है। इस तरह नारी की विरोधाभासी स्थिति आदर्श और यथार्थ के पर्याप्त अंतर को परिलक्षित करती हैं। लिंग समानता, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय स्वतंत्रता और राजनैतिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में महिलाओं की विरोधाभासी स्थिति ने "महिला एक जीव है" को "महिला एक वस्तु है" में बदल दिया है। वर्तमान परिस्थितियों में कुछ अवलोकनीय बिन्दु है जो विचारणीय हैं –

महिलायें कार्य क्षेत्र में पदोन्नति को ठुकरा देती हैं, परिवार और विवाह को ज्यादा महत्त्व देती हैं, कई बार किसी भी प्रकार के शोषण का विरोध करने के बजाय चुप रहना या कुछ न करना उचित मानती हैं।

उपरोक्त स्थितियाँ समाज के चिन्तक एवं प्रबुद्धजन, प्रशासक और नीति निर्माणकों, राजनेताओं के समक्ष एक वैचारिक प्रश्न उपस्थित करती है। यह जरूरी है कि नारी की प्रस्थिति में बदलाव लाया जाय, साथ ही यह भी कि इससे संबंधित वैचारिक आयामों को स्थानीय अवधारणाओं व सिन्द्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया जाय।

सबलीकरण की प्रक्रिया, व्यक्ति परक न होना समाज और संस्कृति का अंग बने। नारी और पुरूष के संबंधों की समानता समाजिक संरचना की प्रकार्यात्मक पूर्व आवश्यकता (Functional Pre-requisite) के रूप में स्थापित होनी चाहिये।

सत्ता और शक्ति व्यक्तिपरक न होकर सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक स्तर पर स्थापित होनी चाहिये।

महिलाओं को शक्ति के क्षेत्र में इच्छित चयन व निर्णय की आजादी, शरीर व प्रजनन पर अधिकार हो तभी संरचनात्मक भेदभाव को दूर किया जा सकता है और कल्पना और यथार्थ के अंतर को दूर कर सशक्तीकरण की प्रक्रिया को सार्थक बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1. माहेश्वरी, सरला– (1998) नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. महाजन, उशा – (2001) बाधाओं के बावजूद नई औरत, मेघा बुक्स, दिल्ली।
3. यादव, राजेन्द्र और वर्मा, अर्चना (सं) – (2001) अंतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2004) – भारतीय समाज : मुद्दे और समस्याएँ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
5. शर्मा, ऋशम देव (2000) स्त्री सशक्तीकरण के विभिन्न आयाम, गीता प्रकाशन, हैदराबाद।
6. सिंघल, विमला (2009) – नारी विमर्श के सकारात्मक चिंतन की अभिव्यक्ति, समाज कल्याण, सितंबर।
7. कश्यप, राजेश (2010) – महिला सशक्तीकरण का असली सच, समाज कल्याण, जनवरी।
8. सहाय, धनंजय (2010) – महिलाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ, समाज कल्याण, जनवरी।

■